International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157; Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 2; Issue 3; May 2017; Page No. 18-18

पुराणों में वर्णित विचित्र विद्याएं

नवीन

शोधछात्रा, कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र, गांव खानपुरा कलां, जिला झज्जर, हरियाणा, भारत

प्रस्तावना

पुराणों में ऐसी विद्याएं आख्यानो के प्रसंग में वर्णित है, जिन पर आधुनिक मानव प्रायः विश्वास नही करता, परन्तु उस युग में वे सच्ची थी तथा उनका उपयोग जनसाधारण के बीच किया जाता था। संस्कृत में 'मन्त्र', 'शास्त्र' माया और विज्ञान तथा पाली में मन्त्र और विद्या के ही पर्यायवाची शब्द है। इन विद्याओं में कुछ नीचे दी जा रही है–

1. अनुलेपन विद्याः– मार्कण्डेय[1] में ऐसे विशिष्ट पादलेप का संकेत है, जिसे पैर में लगाने से आधे दिन में ही सहस योजना की यात्रा करने की शक्ति आती थी। इसके उपयोक्ता एक ब्राह्मण की चर्चा है, जिसने एक अन्य ब्राह्मण को पादलेप दिया। इसके प्रभाव से वह हिमालय पहुँच गया, परंतु सूरज की धूप के कारण तप्त बर्फ पर पैर रखने से वह लेप खुल गया, जिससे यात्रा की यह अलौकिक शक्ति नष्ट हो गयी।
2. स्वेच्छारूपधारिणी विद्याः– मार्कण्डये[2] में इसका सुन्दर दृष्टान्त है। जब कन्धर ने अपने भ्राता कंक के वध का बदला चुकाने के लिए विद्युद्रूप राक्षस का वध किया, तब उसकी पत्नी मदनिका ने कन्धर के निकट आत्मसमर्पण किया। मदनिका को यह विद्या आती थी, जिससे स्वेच्छया अभीष्ट रूप को धारण किया जाता था। वह कन्धर के घर में आकर यक्षिणी बन गयी। इस विद्या के प्रभाव से महिषासुर ने स्वेच्छा से सिंह, योद्धा, मतङ्ग तथा महिष का रूप धारण किया था[3]। पद्मपुराण के सृष्टिखंड में राजा धर्ममूर्ति की प्रशंसा में कहा गया है कि वह 'स्वेच्छरूपधारी' था।
3. अस्त्रग्राम ह्रदय विद्याः– इसके द्वारा शास्त्रों का रहस्य जाना जाता था, जिससे शत्रूओं की पराजय अनायास होती थी। मनोरमा नामक विद्याधरी के रस विद्या के ज्ञान की कथा मार्कण्डेय[4] में दी गई है, जिसने अपने आक्रमणकारी राक्षक से मुक्ति पाने के निमिन्त राजा स्वरोचिप् को यह विद्या दी थी। उपदेशक्रम–रूद्र स्वायम्भुव मनु–वसिष्ठ– चित्रायुध (इसी विद्याधरी की मातामह)– इन्द्रीवराक्ष (इसी विद्याद्यरी का पिता)– मनोरमा[5]। मनोरमा ने इसे पात्रान्तरित करते समय जल स्पर्श कर आगम और निगम के साथ इसे राजा स्वारोचिष् को दिया।
4. सर्वभूतरूत विद्या– इस विद्या के प्रभाव से मनुष्य सभी प्रकार के अमानवीय जीव–जन्तुओं की ध्वनियों का अर्थ समझ लेता है। विद्याघर मन्दार की कन्या विभावरी ने यह विद्या राजा स्वारोचिष् को दहेज में दी थी। मत्स्यपुराण[6] के अनुसार राजा बहादत्त को इस विद्या का ज्ञाता बतलाया है, जिसने नर–मादा चिटियों के परस्पर मनोरंजक प्रेमालाप को समझ लिया था।
5. पद्मिनी विद्याः– इस विद्या के प्रभाव से निधियों को वश में किया जाता था, जिससे इसके ज्ञाता को कभी भी धन की कमी नही होती थी। कलावती के द्वारा राजा स्वारोचिष् की इसके दान की कथा मार्कण्डेय पुराण[6] में दी गयी है।
6. रक्षोध्न विद्या – यज्ञों को अपवित्र बनाने वाले राक्षसों को दूर करने की विद्या।
7. जालन्धरी विद्या– महर्षि वाल्मीकि ने लव–कुश को इस विद्या की शिक्षा दी थी[7]
8. विद्यागोपाल मन्त्रः– भगवान शंकर ने काश्यपवंशी पुण्यश्रव मुनि के पुत्र को यह मंत्र दिया था[8] इस मंत्र के प्रभाव से जिसमें 21 अक्षर होते है, साधक को वाक्–सिद्धि प्राप्त होती है।
9. परा बाल विद्या – सर्वसिद्धिप्रदायिनी इस विद्या के प्रभाव से अर्जुन को कृष्ण लीला का रहस्य समझ में आया था। भगवती त्रिपुरा सुन्दरी ने इस विद्या का प्रथम उपदेश अर्जुन को किया था।[9]
10. पुरूष प्रमोहिनी विद्या– इस विद्या के प्रभाव से स्त्रियाँ पुरूषों को मोहित कर अपने वश में कर लेती है। यमराज की कन्या सुनीथा को रम्भा द्वारा इस विद्या के शिक्षण का वर्णन भूमिखंड[10] में हैं, जिससे वह प्रजापति अत्रि के पुत्र अंश की धर्मपत्नी तथा वेण की माता बनी। वशीकरण विद्या का वर्णन अग्निपुराण[11] में है।
11. उल्लापन विधान विद्या– इस विद्या के प्रभाव से टेढ़ी वस्तु सीधी की जा सकती थी । श्री कृष्ण ने इस विद्या के बल से मथुरा की प्रख्यात कुबड़ी कुब्जा को सरल, सीधा तथा स्वस्थ बना दिया था[12]
12. देवहूति विद्या– दुर्वासा द्वारा कुंती को दी गयी विद्या, जिससे देवता भी बुलाने पर प्रत्यक्ष होते थे। सूर्य भगवान के स्मरण करने पर अनेक सशरीर प्रकट होने की कथा प्रसिद्ध ही है।
13. युवकरण विद्या– स्पर्शमात्र से जीर्ण वस्तुओं को युवक बनाने की विद्या। राजा शन्तनु को यह विद्या आती थी, जिसके बल पर वह स्पर्शमात्र से ही बूढ़ों को ही नवयुवक बना देता था।[13]
14. वज्रवाहनिका विद्या– युद्ध क्षेत्र में शत्रुओं को परास्त करने के लिए यह विद्या अचूक मानी जाती थी[14]। इसी प्रकार अनेक चमत्कारिणी विद्याओं के संकेत पुराणों में मिलते है, जिनमें से कुछ के नाम तथा स्थान इस प्रकार है सिंह विद्या[15], नरसिंह विद्या[16], त्रैलोक्यविजयविद्या[17] आदि।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. मार्कण्डेय, अध्याय 61, 8–20
2. मा०पु०, द्वितीय अध्याय
3. मा० 73/20, स्कन्द, ब्रह्मखण्ड 8/15–28
4. मा० पु०, अ० 63
5. मार्क०, 63/24–28
6. मत्स्यपुराण, 20/25
7. मार्क० पु०, 64/14
8. पद्मपुराण– पातालखण्ड 38/13
9. पा० खंड, 41/132
10. पा०ख०, 43/40
11. भूमिखंड, 34/37
12. अग्निपुराण, 123/26
13. विष्णुपुराण, 5/20/8
14. भागवत पुराण, 9/22/11
15. लिङ्गपुराण, अ० 51
16. अग्नि० पु० 43/13
17. अग्नि० पु०, 63/3
18. ब्रह्म० वै० – गणेश खण्ड, 30/1–32